अण्डादेय कड़कनाथ कुक्कटों में दाने की खपत :-

दाने का प्रकार	आयु सप्ताह	आयु दिन	प्रति दिन पक्षी दाने की खपत	कुल दाने की खपत	वजन
स्टॉटर मैश	1	0-7	8 ग्राम	55	50
	2	8-14	12 ग्राम	141	100
	3	15-21	20 ग्राम	282	140
	4	22-28	30 ग्राम	495	200
	5	29-35	38 ग्राम	761	280
	6	36-42	42 ग्राम	1055	390
	7	43-49	44 ग्राम	1364	450
प्री ग्रोवर मैश	8	50-56	46 ग्राम	1686	510
	9	57-63	47 ग्राम	2014	600
ग्रोवर मैश	10	64-70	48 ग्राम	2350	690
	11	71-77	51 ग्राम	2709	750
	12	78-84	54 ग्राम	3038	830
	13	85-91	56 ग्राम	3477	910
	14	92-98	58 ग्राम	3886	990
प्री लेयर मैश	15	99-105	60 ग्राम	4309	1020
	16	106-112	62 ग्राम	4741	1080
	17	113-119	63 ग्राम	5182	1120
लेयर मैश	18	120-126	65 ग्राम	5636	1180
	19	127-133	67 ग्राम	6105	1220
	20	134-140	69 ग्राम	6591	1290

कड़कनाथ कुक्कुट पालन हेतु मौसम अनुसार प्रबंधन

1. वर्षा के मौसम में प्रबंधन

हमारे देश में बरसात हमेशा जून से सितम्बर माह तक रहती है। इस मौसम में बीमारियाँ बड़ी आसानी से फैलती है, क्योंकि इस मौसम मे नमी बनी रहती है और सूर्य की रोशनी कुक्कुट फॉर्म में कम ही आ पाती है बरसात के दिनों में सबसे अधिक परेशानी ई. कोलाई नामक बीमारी से होती है और इन बीमारियों का मुख्य श्रोत कुंआ या नल होता है इससे बचने के लिए हमेशा डिस्इफेक्टेन्ट दवाई जैसे ब्लीचिंग पावडर 6-10 ग्राम 1000 ली. पानी का उपयोग करना चाहिए।

1. पानी के टॅक को हमेशा साफ करके रखना चाहिए, महिने में कम से कम एक बार चूने से पुताई करनी चाहिए।
2. मुर्गी के दाने में एसीडिफाइर्स का उपयोग करना चाहिए।
3. मुर्गी आवास को हमेशा साफ-सुथरा रखना चाहिए जिससे मक्खियों का प्रवेश न हो सके।

4. वर्षा के दिनों में दूसरी बड़ी समस्या फंगस (फफुंद) की होती है जो कि बड़ी तीव्रता से मुर्गी के दाने मे फैलती है।
5. यदि मुर्गी दाने में थोड़ी सी नमी आ जाती है तो इसमें फफुंद बड़ी तीव्रता से फैल जाती है।
6. इससे बचने के लिए हमें निम्न उपाय करना चाहिए।
   1. अच्छे एवं ताजे आहार का प्रयोग करना चाहिए।
   2. टॉक्सिन वाईन्डर दवा आहार में आवश्यक रुप से देनी चाहिए।
   3. आहार का स्टाक लकड़ी के तख्ते पर करना चाहिए एवं दीवाल से एक इंच की दूरी पर रखना चाहिए, एवं स्टाक आहार को हमेशा सूर्य का प्रकाश मिलता रहना चाहिए।
   4. कुक्कुट आहार हेतु जो भी कच्चा माल खरीदना हो वह सूखा होना चाहिए उसमें नमी 10 प्रतिशत से अधिक नही होनी चाहिए।
   5. यदि दाने(आहार) में फफुंद आ गई हो तो ऐसे आहार में ढेले बनने लगते है, इस आहार को हमें मुर्गीयो को नही देना चाहिए इसके लिए आहार को धूप में सूखाकर ढेलों को फोड़ देना चाहिए इस सूखे हुए आहार में टॉक्सिन वाईन्डर दवा, कॉपर सल्फेट माइकोसार्व मिलाकर मुर्गियों को देना चाहिए।
   6. यदि मुर्गियों ने फफुंद युक्त आहार खा लिया हो तो इस स्थिति में मुर्गिया पतली बीट करने लगती है क्योंकि फफुंद मुर्गियों के यकृत (लीवर) को खराब कर देती है, ऐसी स्थिति में हमें मुर्गियों के पीने के पानी में लीवर टोनिक दवाई देना चाहिए एवं टॉक्सिन वाईन्डर दवा का उपयोग करना चाहिए।
   7. वर्षा के दिनों में मुर्गियों में निम्न बीमारीयाँ अक्सर देखी जाती है :- जैसे :- ई.कोलाई, डर्माटाईटिस, नेकेटिक, एनट्राईटिस, हिपेटाइटिस, काक्सीडियोसिस एवं फंगस टॉक्सिसिटी इत्यादि।

2. शीतकालीन मौसम में कड़कनाथ कुक्कुट आवास का प्रबंधन :-

मुर्गी आवास की सफाई हेतु -

1. पुराना बुरादा, पुराने बोरे, पुराना आहार एवं पुराने खराब पर्दे इत्यादि अलग कर देना चाहिए या जला देना चाहिए।
2. वर्षा का पानी यदि आवास के आसपास इक्ठ्ठा हो तो ऐसे पानी को निकाल देना चाहिए और उस जगह पर ब्लीचिंग पावडर या चूना का बुरकाव कर देना चाहिए।
3. फार्म के चारों तरफ उगी घास, झाड़, पेड़ आदि को नष्ट कर देना चाहिए।
4. दाना गोदाम की सफाई करनी चाहिए एवं कॉपर सल्फेट युक्त चूने के घोल से पूताई कर देनी चाहिए ऐसा करने से फफुंद का प्रवेश दाना गोदाम मे रोका जा सकता है।
5. कुंआ, दिवार आदि की सफाई भी ब्लीचिंग पावड़र से कर लेना चाहिए।

शीतकालीन मौसम में दाने एवं पानी की खपत :-

शीतकालीन मौसम में दाने की खपत बढ़ जाती है यदि दाने की खपत बढ़ रही है तो इसका मतलब है कि मुर्गियों में किसी बीमारी का प्रकोप चल रहा है। शीतकालीन मौसम में मुर्गियों के पास दाना हर समय उपलब्ध रहना चाहिए।

शीतकालीन मौसम में पानी की खपत बहुत कम हो जाती है क्योंकि इस मौसम में पानी हमेशा ठंडा ही बना रहता है इसलिए कड़कनाथ इसे कम मात्रा में पी पाते है इस स्थिति से बचने के लिए मुर्गिया को बार-बार शुद्ध ताजा पानी बदलकर देते रहना चाहिए।